Q) प्राचीन भारत की सामाजिक व्यवस्था को समझने के लिए इतिहासकारों ने महाभारत का चुनाव क्यों किया?

Ans) प्राचीन भारत की सामाजिक व्यवस्था को समझने के लिए महाभारत को इसलिए चुना क्योंकि महाभारत समाज के कई पहलुओं को उजागर करता है। महाभारत सबसे पहले बंधुत्व के बारे में जानकारी देता है क्योंकि कौरव और पांडव दोनों आपस में भाई थे। सत्ता एवं संसाधन के लिए दोनों में टकराव तथा विरोध हुआ जिसके परिणाम स्वरूप महायुद्ध हुआ और अधर्म पर धर्म की विजय हुई। यह घटना स्पष्ट करता है कि संसाधन पर अधिकार को लेकर संघर्ष होते थे और युद्ध का परिणाम घातक होता था।

दूसरी घटना विवाह से संबंधित है। द्रोपदी पांचो पांडव की साझा पत्नी थी। इससे विवाह की परंपरा का पता चलता है। साथ ही साथ स्त्रियों की स्थिति की भी जानकारी प्राप्त होती है। महाभारत काल में स्त्रियों पर पुरुषों का प्रभुत्व था। स्त्रियों का संपत्ति पर अधिकार ना के बराबर था।

महाभारत जाति-प्रथा को समझने के लिए भी सहायक है। द्रोण और एकलव्य की कथा से यह स्पष्ट होता है कि जनजातियों शोषण का शिकार होती थी। इस प्रकार यह देखा गया है कि महाभारत अन्य ग्रंथों की अपेक्षा अधिक मूल्यवान और विश्वसनीय है अतः इसका चुनाव मुख्य स्त्रोत के रूप में किया जाता है।

Scanned with CamScanner

Q) महाभारत के महत्व एवं प्रभाव का वर्णन करें।

Ans) महाभारत महाकाव्य एवं इसके प्रमुख अंश शांति पर्व एवं श्रीमद् भगवद् गीता प्राचीनकाल से लेकर आजतक मानव की नैतिक, चारित्रिक, भौतिक एवं अध्यात्मिक उन्नति के प्रमुख स्त्रोत रहे हैं। श्री- राजगोपालाचारी ने इसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि महाभारत केवल भारत की ही नहीं अपितु पूरे विश्व की संपत्ति है। भारत राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख नेता बाल गंगाधर तिलक ने तो 'गीता रहस्य' का सृजन भी किया है। उनके अनुसार 'इसका केवल दार्शनिक और शैक्षिक मूल्य नहीं है। व्यवहारिक जीवन मे उसकी बड़ी उपयोगिता है।' उसका प्रभाव विचार और कर्म दोनो पर है। इसके विचार राष्ट्र और संस्कृति के नव निर्माण और उत्थान मे सहायक रहे हैं।

वस्तुत: आज महाभारत हम, आप, प्रत्येक के अंदर है। वो बात अलग है कि हमारे अंदर पांडवो के समान बहुत कम है और कौरवो के समान अधिक है। आज हमें पढ़ते समय अर्जुन की तरह लक्ष्य पर एकाग्र हो जाना चाहिए। यही एकाग्रता आपको अपने लक्ष्य तक पहुंचा देगी। लक्ष्य चाहे परिक्षा मे अधिक नम अंको से पास होना हो या फिर ऊँचा प्रशासनिक पद प्राप्त करना हो। युधिष्ठिर से प्रेरणा लेकर हमें सत्य का मार्ग अपनाना चाहिए। मुश्किल समय मे साहस रखने की प्रेरणा हमें भीम से लेनी चाहिए। पिता की इच्छा की पूर्ति की प्रेरणा हमे भीष्म से लेनी चाहिए। शकुनी रूपी छल, दुर्योधन रूपी क्रोध, ईर्ष्या एवं लालच कितना भी मार्ग रोके अर्जुन की तरह एकाग्र होकर विवेक बुद्धि श्रीकृष्णा से मार्ग लेकर बढ़ते रहना चाहिए

Scanned with CamScanner

अंततः आप पाएंगे कि आपने कर्म के बल पर लक्ष्य प्राप्त कर लिया है।

Scanned with CamScanner